ISSN : 2583-2948

सीतायण

ए. के. अर्चना
हिंदी प्राचार्या (हिंदी विभाग)
सैंट मैरिस सिनेंटेनर डिग्री कॉलेज,
सिकंदराबाद, हैदराबाद

श्री राम मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए, अयोध्यापुरी के वह सर्वोच्च नायक कहलाए,

पर जिस सीता ने सर्वस्व दांव पर लगाया,

क्या उस सीता की पीड़ा श्री राम समझ पाए ?

सीता ने राज्य सुख का त्याग किया,

सुंदर वस्त्र तथा स्वर्णाभूषणों का त्याग किया,

सादे वस्त्र अपनाकर अपने पति के साथ,

वन - वन भटकना स्वीकार किया, क्या सीता के त्याग का मोल लगा पाए,

देवता रूप में पूजे जाने वाले श्री राम ?

रावण के स्वर्ण महल में रहकर भी, कुटीर में रहकर भी,

श्री राम की,

अश्रु भरे नेत्रों से प्रतीक्षा की,

रावण के नाना प्रकार के,

आकर्षित प्रस्ताव को ठुकरा कर, अपने शील को भंग न होने दिया,

क्या सीता के विश्वास का मोल लगा पाएंगे परम प्रिय श्री राम ?

एक तुच्छ धोबी के कहने पर,

अपनी देवी तुल्य पत्नी सीता को, महल से बाहर कर दिया,

फिर भी कर्तव्य निभाते हुए,

गर्भिणी सीता ने,

लव एवं कुश के द्वारा,

आपके वंश को आगे बढ़ाया,

ISSN : 2583-2948

सीता की सहनशक्ति के,

खत्म होने का,

तथा धरती माता की,

गोद में समा जाने का,

क्या मोल लगा पाएंगे!

देवता के रूप में श्री राम,

मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में श्री राम,

न्याय प्रिय राजा के रूप में श्री राम ?

आज भी कई नारियाँ,

सीता के रूप में,

अग्नि परीक्षा दे रही हैं,

और श्रीराम का मुखौटा पहने,

कई राम सीता को फिर से,

धरती में समा जाने पर,

मजबूर कर रहे हैं,

नारी को अब दुर्गा का रूप धरना होगा,

शंकर जी के वक्षस्थल पर पग धरे जैसे दुर्गा खड़ी थी,

उसी तरह नारी को रौद्र रूप धारण करके,

सारे संसार पर अपना वर्चस्व स्थापित करना होगा,

अबके रामायण का नाम बदलकर सीतायण करना होगा,

इस सृष्टि को बढ़ाने वाली हर स्त्री का,

हर राम को सम्मान करना होगा...

हर राम को सम्मान करना होगा....